मैं ही हूँ

उछलती लहरों पर ठोस क़दम

maiṅ hī hūṅ. uchaltī lahroṅ par ṭhos qadam

It is I. Firm Steps on the Dashing Waves

by Bakhtullah

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of
Jeff Jacobs https://pixabay.com/images/id-6190184/;
Prawny https://pixabay.com/images/id-1697359/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

सबसे अहम बात : रिश्ता 2

और शागिर्द? 5

मैं ही हूँ 6

आ! 6

मुझे बचाएँ! 8

शक क्या है? 8

यक़ीनन आप वही हैं! 8

इंजील, मत्ती 14:22-33 9

एक दिन एक बहुत बड़ा मोजिज़ा हुआ। 5000 मर्दों को बाल-बच्चों समेत एक झील के किनारे बिठाकर खाना खिलाया गया।

► **इसमें मोजिज़ा क्या था? हर कोई खाना खिला सकता है।**
बेशक। लेकिन मोजिज़ा यह था कि सबके सब पाँच रोटियों और दो मछलियों से सेर हुए।

► **कौन इस तरह का काम कर सकता है?**
एक ही है। ख़ुदावंद ईसा।

लेकिन यह एक अलग कहानी है। अब दिन ढल गया था, और जगह वीरान थी। लोग खिसककर अपने अपने घर जाने लगे।

ख़ुदावंद ईसा और उनके शागिर्द काम से चूर-चूर हो गए थे।

► **क्या उन्होंने वहाँ डेरा लगाकर आराम किया?**
नहीं। ख़ुदावंद ईसा अकसर ऐसा काम करता है जो हम नहीं सोचते। वह तो कश्ती लेकर आए थे। अब उस्ताद ने अपने शागिर्दों को ज़बरदस्ती कश्ती में बिठाकर कहा कि झील के पार चले जाओ।

शागिर्द तो उसे अकेले छोड़कर जाना नहीं चाहते थे। उनका मन यह था कि अब हम इस मोजिज़े की ख़ुशी मनाएँ, एक दूसरे को मुबारकबाद

कहें। और क्या यह अच्छा मौक़ा नहीं होगा कि उस्ताद हम पर ज़ाहिर करे कि वह अल-मसीह है। वही जिसका इंतज़ार ईमानदार सदियों से कर रहे हैं। शायद अब वह दुश्मन को मुल्क से निकाल दे।

सबसे अहम बात : रिश्ता

मगर नहीं। ख़ुदावंद ईसा ऐसी सियासी बातों में दिलचस्पी नहीं लेता। हिंदुस्तान में धर्म और दीन हमेशा सियासी रंग अपनाता है। धर्म के बड़े लीडर हमेशा सियासत में आ जाते हैं। पर ईसा मसीह को सिर्फ़ एक बात अहम है।

► **वह क्या?**

ख़ुदा बाप से रिश्ता।

लोग तो ख़ुदा को फ़रक़ फ़रक़ समझते हैं।

कुछ उसकी पूजा करके समझते हैं कि यह मेरी मदद करेगा। इससे आगे वह सोचते ही नहीं।

कुछ मानते ही नहीं कि ऐसी कोई हस्ती है।

कुछ उसे बहुत दूर और बहुत अज़ीम समझते हैं। इतना अज़ीम कि उसने हमें बनाकर इस दुनिया में रख छोड़ा है।

इन सोचों में एक बात बराबर है।

► **वह क्या?**

इनमें से कोई नहीं समझता कि मेरा ख़ुदा से कोई रिश्ता है।

ख़ुदावंद ईसा की सोच फ़रक़ थी। उसने सब पर ज़ाहिर किया कि ज़िंदगी में सबसे अहम बात ख़ुदा से रिश्ता है। शागिर्दों को अलविदा करके वह रात के अंधेरे में साथवाले पहाड़ पर चढ़ गया। यह कोई छोटी पहाड़ी या टिब्बा नहीं था। उस इलाक़े के पहाड़ ऊँचे ऊँचे होते हैं।

ख़ुदावंद ईसा यह अपनी ख़िदमत के दौरान बार बार किया करता था। जब कभी फ़ुरसत मिलती तो चुपके से अपने शागिर्दों को छोड़ किसी पहाड़ पर या किसी वीरान जगह जाता था। कोई भी साथ नहीं होता था।

► **अकेले क्यों?**

दुआ करने के लिए।

► **दुआ से क्या मुराद? जादू-मंत्र? मुराक़बा? ख़ुदा की ज़ात पर ध्यान? नमाज़? पूजा?**

नहीं। यह इनसानी सोच है। आम इनसान ऐसी सोच रखता है। ईसा मसीह ने एक बार फ़रमाया,

> दुआ करते वक़्त रियाकारों की तरह न करना जो इबादतख़ानों और चौकों में जाकर दुआ करना पसंद करते हैं, जहाँ सब उन्हें देख सकें। ... इसके बजाए जब तू दुआ करता है तो अंदर के कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर और फिर अपने बाप से दुआ कर जो पोशीदगी में है। फिर तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा। (मत्ती 6:5-6)

देखें, ख़ुदावंद ईसा का ख़ुदा से ताल्लुक़ अनोखा है।

► **किस तरह?**

वह उसे बाप कहता है। यह बाप का रिश्ता है। ऐसा बाप नहीं जो दूर दूर शायद दुबई में रहते हुए पैसे कमाने में लगा रहे मगर अपने बच्चों पर ध्यान ही न दे। बेशक वह पैसे ठीक-ठाक कमाए, बच्चों की धूमधाम से शादियाँ भी करवाए मगर उसका उनसे कोई ख़ास ताल्लुक़ न हो ।

ख़ुदावंद ईसा वीरानी में इसलिए जाता है कि दिल खोलकर ख़ुदा बाप से बात करे। गो उस रात वह बहुत थका हुआ था तो भी वह पूरी रात अकेले रहा ताकि बात करते करते हलका हो जाए, ताज़ादम हो जाए, तक़वियत पाए।

कैसी बात!

यह है हक़ीक़ी दुआ, हक़ीक़ी परस्तिश। इसी लिए जब हम ख़ुदा को पुकारते हैं, उससे बात करते हैं तो 'तू' कहना सबसे मुनासिब है। 'तू' कहने से हम ज़ाहिर करते हैं कि हम उसके नन्हे बच्चे हैं जो दुख और सुख के हर मामले में अपने हाथ उसकी तरफ़ फैलाते हैं। तब आलमों का मालिक झुककर हमारी हकलाती हुई बातें ग़ौर से सुनता है। हमारी फ़िक्र करता है।

जब बच्चे छोटे होते हैं तो माँ-बाप उनके दुख-सुख में शरीक होते हैं। हम हर हकलाती हुई बात ग़ौर से सुनते हैं। पहली बार खड़े हुए, पहला

क़दम रखा तो हम ख़ुद उछलकर ख़ुशी मनाते हैं। पहले शाहकार—कोई तस्वीर, कोई छोटा-सा मिट्टी से बना खिलौना—माँ-बाप फ़ख़्र से उसकी तारीफ़ करते हैं।

देखो, हमारा आसमानी बाप ऐसे प्यार से हम पर ध्यान देता है। हमारा काम जो भी हो कुछ नहीं है तो भी वह फ़िकर करता है। हमारे साथ ख़ुशी मनाता है, दुख खाता है। दुख-सुख में शरीक।

और शागिर्द?

तक़रीबन तीन बजे रात के वक़्त ख़ुदावंद ईसा दुआ से फ़ारिग़ होकर पहाड़ से उतरा।

► **अब वह क्या करेगा?**

शागिर्द तो कश्ती पर सवार झील के बीच में पहुँच गए हैं। यानी दो या तीन किलोमीटर दूर। उनमें वह सुकून और आराम नहीं है जो उनके उस्ताद में इस वक़्त है। वह मुश्किल ही से कश्ती को आगे चला रहे थे, क्योंकि सख़्त हवा उनके ख़िलाफ़ चल रही थी। हवा के हर फूँक से लहरें बढ़ती जा रही थीं। सवारी बहुत तंग हो रहे थे।

अचानक एक ने चीख़ मारी, "अरे, यह देखो! यह क्या है?"

सब सख़्त घबरा गए। लहरों पर चलते हुए कोई चीज़ चल रही है, हमारी तरफ़। कभी पानी की वादी में उतरती ओझल होती, कभी पानी के पहाड़ पर चढ़ती दिखती। शागिर्द थरथराने लगे। "यह कोई भूत है।" डर के मारे वह चीख़ने-चिल्लाने लगे।

मैं ही हूँ

लेकिन यह क्या आवाज़ थी? एक जानी-पहचानी आवाज़। उस्ताद की ठोस आवाज़। "हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।"

जो तूफ़ान शागिर्दों के दिलों में गरज रहा था वह एकदम थम गया। उनको नहीं मालूम कि यह किस तरह हो सकता है लेकिन उस्ताद पानी पर चल रहा है। यह जानना काफ़ी है।

जब ख़ुदावंद ईसा फ़रमाता है "मैं ही हूँ" तब हम हौसला रख सकते हैं। अब तक तूफ़ान चल रहा है, हवा मुख़ालिफ़ है लेकिन वही मेरे साथ है।

अब एक शागिर्द बनाम पतरस बोल उठा। पतरस काफ़ी जोशीला था। उस्ताद को देखते ही उसके अंदर यह जज़बा उभर आया कि मैं भी उस्ताद के साथ पानी पर चलना चाहता हूँ। क्या उस्ताद ने ख़ुद नहीं कहा था कि जैसे उस्ताद वैसे उसके शागिर्द? वह बोला, "ख़ुदावंद, अगर आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का हुक्म दें।"

ध्यान दें, उसने नहीं कहा कि मैं यह भी कर सकता हूँ। उसने कहा, अगर आप ही हैं तो मुझे अपने पास आने का हुक्म दें। उसको पता है कि यह उस्ताद के कहने पर ही हो सकता है।

ख़ुदावंद ईसा ने फ़रमाया, "आ।"

आ!

अब पतरस को पूरा यक़ीन है कि वह सचमुच पानी पर चल सकता है।

► **क्यों?**

इसलिए कि ख़ुद उस्ताद ने अपने पास आने का हुक्म दिया।
ज़िंदगी और मौत की तूफ़ानी लहरों पर चलते वक़्त हमें उसी के हुक्म की ज़रूरत है। वह हुक्म जो कहता है कि आ।
तब पतरस कश्ती से उतरता है। वह पानी पर चलने लगता है, उस्ताद की तरफ़। वह कितना ख़ुश है। शायद कुछ फ़ख़्र भी महसूस कर रहा हो कि मैं भी पानी पर चल-फिर सकता हूँ।
लेकिन अचानक वह पानी में धँसने लगता है।

► **क्यों?**

अचानक उसे महसूस होता है कि हाय, मेरी हालत कितनी नाज़ुक है। लहरों पर चलते हुए वह कभी पानी के पहाड़ पर चढ़ता कभी वादी में उतरता है। पहले वह टकटकी बाँधकर उस्ताद को देखता है। लेकिन अब उसे एकदम लहरों का ज़ोर महसूस होता है, और वह सख़्त घबरा जाता है।

► **वह क्यों घबरा जाता है?**

इसलिए कि उसकी आँखें ख़ुदावंद ईसा पर लगी नहीं रहतीं। इर्दगिर्द के ख़तरे उसकी तवज्जुह अपनी तरफ़ खींच लेते हैं।

जब हम ख़ुदावंद ईसा को टकटकी बाँधकर देखते हैं, तब ही तूफ़ानी पानी पर हमारे क़दम ठोस रहते हैं।
पतरस से ग़लती होती है। लेकिन एक काम वह सही करता है। वह चिल्ला उठता है, "ख़ुदावंद, मुझे बचाएँ!"

मुझे बचाएँ!

तब उस्ताद अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लेता है। साथ साथ वह सीधा असली बात छेड़ता है। वह फ़रमाता है, “ऐ कमएतक़ाद! तू शक में क्यों पड़ गया था?”

शक क्या है?

► **तूफ़ान में ठोस क़दम की कुंजी क्या है?**
यह कि हम शक न करें। ईमान रखें कि वह हमें महफ़ूज़ रख सकता है। उस को टकटकी बाँधकर देखें।

► **शक का क्या मतलब है?**
डगमगाना। अपने इरादे में पक्का न रहना। कभी यह सोचना कभी वह। हिचकिचाना। पतरस न सिर्फ़ उस्ताद की तरफ़ देख रहा था बल्कि मौजों की तरफ़ भी। इसलिए वह डगमगाने लगा।

दोनों कश्ती पर सवार हो जाते हैं। तब हवा एकदम थम जाती है। उस्ताद की मौजूदगी में हवा ख़ुद बख़ुद थम जाती है।

यक़ीनन आप वही हैं!

तब शागिर्दों ने कहा, “यक़ीनन आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं!”
सदियों से यहूदी एक आनेवाले के इंतज़ार में थे जो उन्हें नजात दे। वह जो अल-मसीह होगा। वह एक अनोखी और लासानी हस्ती होगा।

उसका ख़ास इख़्तियार होगा। उस वक़्त मरीज़ शफ़ा और अंधे देख पाएँगे, लँगड़े उछलकर चल सकेंगे। उससे एक नया ज़माना शुरू होगा। उस वक़्त के नविश्तों में उसे ख़ुदा का फ़रज़ंद कहा गया।

अब हम नहीं कह सकते कि शागिर्दों को पूरी समझ आई। लेकिन एक बात उनकी समझ में आई : यह कि ख़ुदावंद ईसा को ख़ास इख़्तियार, लासानी क़ुव्वत है। ऐसा इख़्तियार, ऐसी क़ुव्वत जो सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदा की तरफ़ से हो सकती है।

इंजील, मत्ती 14:22-33

इसके ऐन बाद ईसा ने शागिर्दों को मजबूर किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे निकलें और झील के पार चले जाएँ। इतने में वह हुजूम को रुख़सत करना चाहता था। उन्हें ख़ैरबाद कहने के बाद वह दुआ करने के लिए अकेला पहाड़ पर चढ़ गया। शाम के वक़्त वह वहाँ अकेला था जबकि कश्ती किनारे से काफ़ी दूर हो गई थी। लहरें कश्ती को बहुत तंग कर रही थीं क्योंकि हवा उसके ख़िलाफ़ चल रही थी।

तक़रीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी पर चलते हुए उनके पास आया। जब शागिर्दों ने उसे झील की सतह पर चलते हुए

देखा तो उन्होंने दहशत खाई। “यह कोई भूत है,” उन्होंने कहा और डर के मारे चीख़ें मारने लगे।
लेकिन ईसा फ़ौरन उनसे मुख़ातिब होकर बोला, “हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।”
इस पर पतरस बोल उठा, “ख़ुदावंद, अगर आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का हुक्म दें।”
ईसा ने जवाब दिया, “आ।” पतरस कश्ती पर से उतरकर पानी पर चलते चलते ईसा की तरफ़ बढ़ने लगा। लेकिन जब उसने तेज़ हवा पर ग़ौर किया तो वह घबरा गया और डूबने लगा। वह चिल्ला उठा, “ख़ुदावंद, मुझे बचाएँ!”
ईसा ने फ़ौरन अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया। उसने कहा, “ऐ कमएतक़ाद! तू शक में क्यों पड़ गया था?”
दोनों कश्ती पर सवार हुए तो हवा थम गई। फिर कश्ती में मौजूद शागिर्दों ने उसे सिजदा करके कहा, “यक़ीनन आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं!”